

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

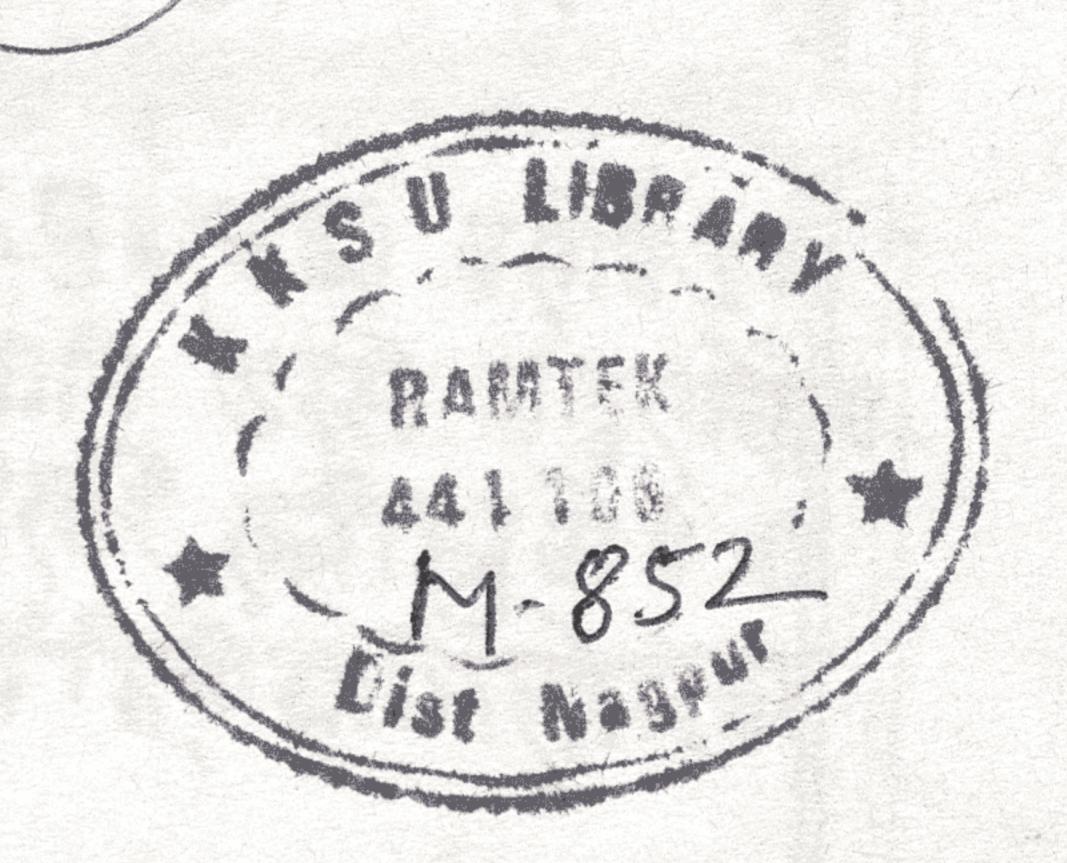
Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

विजारिशायसम्ब स्त्रहासतीयसेट्रोमानास्त्रको अन्मतिस्त्रवायतसेश्रीग्रवेनमः १ वन्दे विस्ति वन्दे स्वाप्ति विस्ति स्ति विस्ति विस्ति

Accession No: - 10197 M852 THE: - 318218201207 THE: - (6)



डिति डिरोडित अताइडिश केरर सराह डोने आर्प अस सहार खंसोऽसड हतानुम बारिपोश्शन् अवयो राजित्यम न्ममनतो रीर्डिशोर नेपधाया आहरिस्सो श्रास नामि उद्यानामिर्देश दूनांसोशो आस्त्रोपश्च खरेऽअस्नारे बेड्डोडि अञ्चर्त्रोण राह्य तिश्रशाद्य द्विमाणा ने अत्वक्षांतरेण हिन् सात्वसः सनस्य सरेश्वसादि पारेश्वनधानाम् अंडितिविमान्त दिनीवश्णद् ने अनुसकान्त्रमान्त्र ह अनोऽम श्रासीहि द्रमो अश्रसोशि अमयम् नोमनस्त्ररे सावन्द्रह

प्यादेश आता धार्ती (अवस्थित अवस्था अवस्था प्राप्ती राहा वृक्त प्रस्त प्रमुद्ध वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता प्रमुद्ध आते। दिवन्ती क्षित्र वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता अवस्था आता दिवन्ती कामि दिवने वर्ता वर्ता वर्ता अवस्था अवस्था आवस्था आवस्था आवस्था अवस्था अवस्

नोबससी जामामा नारा नादिविश्व लिनारेन व खानोदिवर्वन आमी खमरेहिना खुमेबमंजमा जिन्मकारण नवममाज्ञा उसिम्मितिव प्रमानम्म सामानम अग्रम्भो प्राणी सिव्यक्षिति व सामानम्म सामानम् अग्रम्भो प्राणी सिव्यक्षिति व सामानम् सामानम् अग्रम्भो प्राणी सिव्यक्षिति व सामानम् स्था अन्तर्वे सामानम् अग्रम्भ स्था स्था सामानम् स्था अन्तर्वे सामानम् स्था सामानम् स्था सामानम् स्था सामानम् स्था सामानम् अग्रम्भ सामानम् स्था सामानम् सा

तिक्राचेत्रपमा जम-ज्ञणेतिहि भोतभगोत्रव अद्योत्त शोवाक व्यक्त त्याधनवो दानवाने विश्तेषा विशेष विभान विश्वेषा विश्वेष स्थान विश्वेषा विश्वेष वि

जातर्यायेणात् इन्हेराणिष लाक्षाद्य उयोगेव हेवमन्वहेश प्रत्याद्य बोर्ग्गणात एतपुर य्वस्ति कंड्र विस्ति प्रत्याद्य विर्माणिक विस्ति प्रत्याद्य विस्ति प्रत्याद्य विर्माणिक विद्याद्य विद्याद्य क्षेत्र विद्याद्य क्षेत्र विद्याद्य क्षेत्र विद्याद्य क्षेत्र विद्याद्य क्षेत्र क्षेत्र

जानाम् जनाङ्यास् जायाम् खम् ६ इ वति मिति वरोन्ते गाए अनुस् एस् यद् अशुस् स्व गार् व म ० ए अनुस् इन्ति आणे खे०९ वहे महे० हिश्व आशिष्ठि याम् यासाम् वासाम् यासाम् वासाम् वासाम् वासाम् वासाम् वासाम् वासाम् वासाम् तास्य तास्य तास्य नास्य ना

मसाधिक विषय पर्णायान नामित् यसादिन महिना गिरि आमु विस्त्रमाण अनिरिष्य आहुन रादिन निवशा है। अनिर्धि परेते पर

 ,CREATED=22.10.20 11:06 ,TRANSFERRED=2020/10/22 at 11:08:13 ,PAGES=6 ,TYPE=STD ,NAME=S0004353 ,Book Name=M-852-ASHTADHYAYI ,ORDER_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=00000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=00000003.TIF ,FILE4=00000004.TIF ,FILE5=00000005.TIF ,FILE6=00000006.TIF

[OrderDescription]